भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

20 सितंबर, 2014

अर्जुन के राजनीतिक पतन व आत्मसमर्पण पर

सन 2005 से हमारी पार्टी के डीकेएसजेडसी व एसएमसी सदस्य रह चुके अर्जुन ने अपनी पत्नी रनीता जो कि पश्चिम बस्तर डीवीसी की सचिवालय सदस्या थी, के साथ मिलकर राजनीतिक पतन के शिकार होकर, बिना बताये 14 जुलाई को पार्टी छोड़कर भाग गया और जुलाई माह में ही तेलंगाणा के डीजीपी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। आज के कठिन दौर में जनता व काडरों के विश्वास को तोड़कर दुश्मन के सामने नतमस्तक होकर अर्जुन ने क्रांतिकारी आन्दोलन को काफी नुकसान पहुंचाया है। अर्जुन और रनिता की पार्टी सदस्यता को रद्द करके उन्हें पार्टी से बहिष्कृत किया जाता है। लगातार बढ़ते ऑपरेशन ग्रीनहंट के हमलों के बीच अर्जुन के आत्मसमर्पण पर पार्टी की ओर से प्रतिक्रिया व्यक्त करने एवं उससे संबंधित सच्चाई को जनता के सामने लाने में जो देरी हुई है, उसके लिए हम खेद व्यक्त करते हैं।

पार्टी में भर्ती होने के तुरंत बाद सन 1990 में ही अर्जुन दण्डकारण्य में कदम रखा था और 1993 से मिलिटरी फ्रंट में काम करने लगा था। इस क्रम में वह दस्ता कमाण्डर, सीवायपीसी सदस्य, कम्पनी–1 के कमाण्डर, मोमिस (मोबाईल मिलिटरी स्कूल) के इंचार्ज के रूप में विभिन्न जिम्मेदारियां निभाते आया। फरवरी, 2014 में संपन्न एसजेडसी की 10 वीं बैठक में अर्जुन को बटालियन–2 के कमाण्डर/बीएनपीसी सचिव की जिम्मेदारी दी गई थी। उच्च स्तर के फार्मेशन की जिम्मेदारी देने के छह माह के अंदर ही अर्जुन ने हथियार डाल दिया। कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को क्रांतिकारी आंदोलन की जीत एंव क्रांतिकारी जनता की महान ताकत पर अटूट विश्वास होना चाहिए। पूरे आत्मविश्वास के साथ क्रांतिकारी व्यवहार में लगे रहना चाहिए। आज दण्डकारण्य व देश का क्रांतिकारी आन्दोलन कठिन परिस्थितियों से जुझते हुए, चुनौतियों का सामना करते हुए, दुश्मन के प्रतिक्रांतिकारी युद्ध का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ रहा है। इन कठिन परिस्थितियों को देखकर, दुश्मन की ताकत व उसके हमलों की तीव्रता का न केवल ज्यादा आंकलन लगाने बल्कि उसे अपराजेय मानने के कारण अर्जुन का मनाबल गिर गया था। देश–दुनिया की परिस्थितियों के अभूतपुर्व ढ़ंग से क्रांति के अनुकूल बनने के क्रम को न देख सकने के कारण अर्जुन का आत्मविश्वास घट गया था। क्रांतिकारी आन्दोलन व जनता पर से उसका विश्वास उठ गया था। सामाजिक विकास के क्रम को न समझने, क्रांतिकारी जनयुद्ध के आगे बढ़ने की प्रक्रिया में हमारे व शत्रु बलों के बीच में आने वाले बदलावों, उतार–चढ़ावों, टेडे–मेंढ़े रास्तों से होकर गुजरने एवं जीत–हार–अंततः जीत की प्रक्रिया के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण न अपनाने के चलते अर्जुन में निराशावाद पनपा, क्रांतिकारी जोश ठंडा होता आया। स्वार्थ की भावना उभरकर आयी और बलिदान की भावना खत्म हो गयी थी। यह राजनीतिक कमजोरी ही अर्जुन के राजनीतिक पतन का सबब बन गयी।

'जनता ही इतिहास की निर्माता है', 'जनयुद्ध में अंतिम जीत जनता की ही होगी', इस ऐतिहासिक सच्चाई को अर्जुन समझ नहीं सका। सांगठनिक व सैनिक समस्याओं को हल करने में अजुन लंबे समय से गंभीर उदारतावाद का शिकार रहा। उसके क्रांतिकारी व्यवहार में प्रकट हुए उदारतावाद के खिलाफ यद्यपि कमेटी ने समय–समय पर संघर्ष किया था लेकिन वह नाकाफी साबित हुआ। अर्जुन के क्रांतिकारी व्यवहार व कामकाज में गंभीर उदारतावाद दिखता ही था, साथ ही दण्डकारण्य आन्दोलन के नेतृत्वकारी संगठन–एसजेडसी के सदस्य की हैसियत से अपनी राजनीतिक चेतना को, जनता व काडरों के प्रति जिम्मेदारी व जवाबदारी को दृढतापुर्वक, आखरी दम तक निभाने के स्तर तक विकसित करने में अर्जुन की व्यक्तिगत भुमिका बहुत कमजोर रही।

उदारतावाद के चलते, बदलती हुई परिस्थितियों की मांग के मुताबिक स्वंय की मानसिक तैयारी, लड़ाकु मानसिकता, संघर्षस्फूर्ति एवं स्वयं के दृष्टिकोण को विकसित करने के प्रति वह उदासीन रहा। पार्टी के रणनीतिक नेतृत्व की हैसियत से सर्वहारा वर्ग के अगुवे दस्ते के इस दृढसंकल्प कि 'आत्मसमर्पण की बजाय मृत्यु सही', के साथ आखिरी सांस तक आंदोलन में, जनता की सेवा में डटे रहने की बजाय अर्जुन ने स्वार्थ भावना से, कम्युनिस्ट आदर्श, त्याग व बलिदान की भावना को छोड़कर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिए। जिन शोषक–शाषक वर्गों के खिलाफ पिछले दो दशक से भी ज्यादा समय से लड़ते आया, आज उनके टुकडों पर पलने, उन्हीं के शरण में गया जो कि निंदनीय, घृणास्पद ही नहीं बल्कि हर पल, हर जगह, हर स्तर पर विरोध करने लायक नीच हरकत है।

रनिता एक वरिष्ठ आदिवासी महिला कामरेड थी जो पार्टी छोड़कर जाते समय पश्चिम बस्तर डिवीसी सचिवालय की सदस्या थी। रनिता में व्यक्तिवाद, व्यक्तिगत कामकाज व नौकरशाही आदि गैर–सर्वहारा रूझानों के साथ–साथ वर्ग दिशा की समझ में कमी थी। 2012 में आयोजित प्लीनम के दौरान उसे चेतावनी दी गई थी। बाद में भी रनिता की समस्याएं यथावत जारी रही। रनिता ने 2012 में ही पार्टी छोड़ने का निर्णय लिया था लेकिन अर्जुन की समझाइश पर रूकी थी। चुंकि रनिता पहले से ही ढुलमुल थी इसलिए अर्जुन के फैसले के साथ ही दोनों भाग गये।

अर्जुन ने अपनी आखिरी चिट्ठी में जो वादा किया था, आत्मसमर्पण के बाद उसका ठीक उल्टा किया। दुश्मन के सामने सारे राज खोल दिये। बिना बताये भाग कर दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण करने वाले से ईमानदारी की आशा तो नहीं की जा सकती है। मोमिस से बीएन–2 में तबादले, झुठी सुधार योजनाओं के प्रति पार्टी के रवैये, तेलंगाना के गठन, पार्टी में आंतरिक जनवाद के अभाव व अपनी अस्वस्थता को मीडिया के सामने अर्जुन ने अपने आत्मसमर्पण के कारण बताये। आन्दोलन की जरूरतों व काडरों की क्षमताओं को ध्यान में रख कर पार्टी में किसी का भी कहीं भी तबादला किया जा सकता है। इस बात से सभी वाकिफ हैं। साधारण पार्टी सदस्य ही नहीं, दल सदस्य भी तबादला करने पर दूसरे राज्यों व जोनों में खुशी से क्रांतिकारी व्यवहार में शामिल होने के लिए चले जाते हैं। संगठन, मिलिटरी, संयुक्त मोर्चा व विभागों के बीच तबादले भी सामान्य बात है। एसजेडसी स्तर में रहते हुए तबादले को पार्टी छोड़ने व आत्मसमर्पण का कारण बताना अर्जुन के दिवालियेपन को ही दर्शाता है। दरअसल वह कठिन परिस्थितियों में शारीरिक व मानसिक रूप से कठिन परिश्रम करने के लिए तैयार नहीं था।

'सुधारों का फायदा जनता तक पहुंचना चाहिए, पार्टी इन्हें रोक रही है', अर्जुन का कहना सरासर गलत है। झुठे सुधारों के प्रति हमारे व्यवहार को लेकर सीसी की नीति स्पष्ट है। अलग–अलग इलाकों में वहां की ठोस परिस्थितियों के साथ जोड़कर लागु करने की पद्धती पर एसजेडसी अमलकर रही है। झुठे सुधारों के पीछे की शोषक–शासक वर्गों की साजिश से सभी वाकिफ हैं। बावजूद इसके यदि कुछ मतभेद थे, तो पार्टी कमेटियों, प्लीनमों में चर्चा कर सकता था।

तेलंगाना के गठन से संतुष्ट होकर मुख्य धारा में लौटने की बात से यही समझा जा सकता है कि अर्जुन अपने मुल मकसद को ही भूला दिया था। भारत में नवजनवादी क्रांति व समाजवादी क्रांति को सफल बनाना पार्टी का घोषित लक्ष्य है। पृथक तेलंगाना के आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में 1995 से ही हमारी पार्टी स्पष्ट रूप से जनवादी तेलंगाना के लक्ष्य को सामने रखकर आन्दोलन का नेतृत्व करते आ रही है। भौगोलिक तेलंगाना से क्रांति का कोई लक्ष्य पुरा होने वाला है और न ही जनता की मौलिक समस्याओं का समाधान।

अर्जुन पार्टी में आंतरिक जनवाद न होने का अनर्गल प्रचार कर रहा है। पार्टी संगठन के संचालक उसूल है, जनवादी केंद्रीयता जिसके तहत पार्टी के अलग–अलग स्तरों के उपयुक्त मंचों–बैठकों, प्लीनमों, अधिवेशनों एवं कांग्रेस में तमाम मुद्धों पर खुलकर बहस–मुबाहिसें होती हैं और एकमत या बहुमत के आधार पर निर्णय लिये जाते हैं। हालांकि अर्जुन भी इस प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा रह चुका था।

जहां तक अस्वस्थता की बात है, कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों में यह स्फूर्ति और जिद् होनी चाहिए कि आखिरी सांस तक जितना संभव हो, आन्दोलन व जनता की सेवा में लगे रहे। आन्दोलन में ही और संघर्षरत जनता के बीच में ही जिंदगी और मौत का फैसला हो जाए।

अर्जुन का आत्मसमर्पण हमारे लिए एक नकारात्मक सबक है। पार्टी के द्वारा अपनाए गए बोल्शेवीकरण अभियान को और सशक्त ढ़ंग से संचालित करने, कठिन परिस्थितियों का सामना करने के लिए आवश्यक कार्यक्षमता को विकसित करने की ओर यह हमें इंगित करता है। नेतृत्व को समझौता विहीन क्रांतिकारी स्फूर्ति से लैस होने, लक्ष्य के प्रति समर्पित भावना के साथ आखरी दम तक डटे रहने की क्रांतिकारी प्रतिबद्धता को हर कमेटी सदस्य में विकसित करने की जरूरत को एसजेडसी चिन्हित करती है और उस दिशा में आगे बढ़ने का वादा करती है।

गुड्सा उसेंडी

(गुड्सा उसेण्डी)

प्रवक्ता,

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)